

1,97,13. 342,8. 347,15. RAGH. 6,47. पञ्चादिसूत्र^० P. 5,3,56, Schol. अ^० R. 2,21,57. — c) *sitzend* MBH. 2,2000. HARIV. 891. संनिविष्टोद्गम als Umschreibung von उत्थान AK. 3,4,18,120. — d) *steckend* —, *gehängt an, angebracht*: ^०कर्षिक Suçr. 2,196,17. 297,4. — e) *sich befindend auf*: सत्पथे MBH. 3,13788. सनातने वर्त्मनि R. 5,11,22. — f) *in Jmdes Hand seiend* so v. a. von Jmd abhängig: बलावमर्दस्त्वयि संनिविष्टः R. 5,43,11. — Vgl. संनिवेश. — caus. 1) *einführen* (in ein Haus u. s. w.), *einquartieren*: कृत्तं स्वपुरं संन्यवेशयत् (संप्रवेशयत् die neuere Ausg.) HARIV. 3843. ते पर्णशालायां वासार्थं संन्यवेशयत् R. 3,6,15. KATHAS. 24,159. — 2) *niedersetzen, hinstellen*: तत्र तं गिरिम् R. 6,84,30. HARIV. 12404. 12406. त्वमिह — देवराजो नैनाक परिधः संनिवेशितः R. 5,7,6. कैमवते पादे गर्भो ऽयं संनिवेश्यताम् *niederlegen* 1,38,17. — 3) *aufstellen*: Truppen MBH. 6,2407. *sich lagern lassen*: बलं दारकायाम् 3,663. R. 2,83,15 (92,24 GORR.). KATHAS. 46,48. 103,103. — 4) *einbringen, hineinstecken, thun in*: अस्मृ शरीरम् M. 11,202 (संनिवेश्य bei LOIS. zu lesen). MBH. 13,237. Suçr. 2,33,16. तेषां त्वयवान् — संनिवेश्यात्ममात्रासु M. 1,16. खं खेषु 12,120. हृदीन्द्रियाणि ऽवर्तयत्. Up. 2,8. Bhāg. P. 6,4,27. शिरश्चैव शरीरे संनिवेशितम् *hineingeschoben, hineingedrückt* R. 3,75,27. — 5) *schleudern, abschiessen auf* (loc.) R. 5,41,23. — 6) *anheften, anlegen*: ललाटे मणिम् VIKR. 73,8. — 7) *anlegen, gründen*: eine Stadt HARIV. 1344. — 8) *Jmd einsetzen in*: स्वराज्ये MBH. 5,4978. R. 7,54,13. 100,18. तत्पदे चिरकाङ्क्षिते धातोः स्थान इवादेशं मुन्येवं संन्यवेशयत् RAGH. 12,58. — 9) *Jmd Etwas aufladen, übertragen*: तत्संनिवेशितयुरेण भर्त्रा Çāk. 95, v. 1. दिवा कृत्वा तयोर्वर्ष पुष्करः संन्यवेशयत् MĀRK. P. 53,20. — 10) *richten auf* (loc.): मनः Bhāg. P. 9,9,15.

— अभिसंनि, partic. ^०विष्ट in Jmd vereinigt Çāk. zu BRH. Ār. Up. S. 103.

— निस् 1) *sich hineinbegeben in* (acc. und loc.): भर्तुरङ्गे (अङ्गे ed. Calc.) निर्विशतो भयात् RAGH. 12,38. निष्क्रामतो निर्विशतो Bhāg. P. 4,4,1. तत्र 5,17,15. व्रजम् 10,22,28. गर्तम् 23,22. गृहेषु (so v. a. Hausvater werden) 29,34. 5,1,18. निर्विशति घना यस्य ककुदि 10,36,4. यो (पुरो) निर्विष्य समावसत् 3,22,32. पुलिनम् 10,32,11. 52,37. med. 3,18,1. 8,19,10. 10,89,51. निर्विष्ट *hineingegangen, steckend in* 1,2,33. 3,16,34. 4,24,56. *sitzend* RAGH. 12,68 (निर्विष्ट ed. Calc.). — 2) *ein Haus beziehen, heirathen* (vom Manne): निर्विषन् (lies निर्विशन्) *heirathend* und अनिर्विष्ट *nicht verheirathet* s. u. परिविष. — 3) *abtragen, bezahlen*: निर्विष्ट भर्तृपिण्डम् MBH. 8,637. अस्ति नूनं कर्म कृतं पुस्तादनिर्विष्टं पापकं धार्तराष्ट्रिः 5,1816. — 4) *geniessen, Genuss* —, *Freude an Etwas haben*; act. mit acc.: प्रदोषान् RAGH. 6,34. मधुम् 9,35. इन्द्रियसुखानि 19,47. क्रोडारम्भम् KUMĀRAS. 1,29. नगेन्द्रम् MEGH. 63. आत्माभिलाषम् 109. शरदम् RĀGA-TAR. 2,140. नारीम् KĀVJĀD. 3,109. निर्विष्य RAGH. 4,51. 18,2. PĀNĀR. 4,1,45. शिरो निर्विष्टकामा HARIV. 7863. निर्विष्यतो यौवनश्रीः RAGH. 6,50. तत्र निर्वेशि निद्रामुखम् DAÇAK. 24,16. fg. निर्विष्ट *genossen* RAGH. 6,38. 12,1. 13,60. 14,80. Spr. (II) 1087. — 5) *निर्विशक्त्यो* MBH. 13,3453 fehlerhaft für निवि^०, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. निर्वेश fg., निर्विष्टव्य (statt der zweiten Bed. ist zu setzen *woran man Genuss haben kann*) und निवेश्य 3), wo die ed. Bomb., wie wir vermuthet hatten, निर्विष्य liest.

— परि *umlagern*: रत्नांसि समस्तं देवान्पर्यविशन् TS. 2,4,1,2. TBR. 2,

2,10,5. तं पर्यविशन् एव वेदं विन्दते परिवेष्टारम् (zu विष्) TS. 6,3,1, 2,3. परिवेष्टं जङ्घुषं विन्धतः सीम् RV. 1,116,20. *belagern*: उत्तरं नगरद्वारमहं सौमित्रिणा सह । निपीड्य परिवेष्टयामि सबलो यत्र रामः R. 6,13,31. — Vgl. परिवेशत्, अपरिवेष्ट und 1. विष् mit परि, welches häufig mit श geschrieben wird. Hierher gehört wohl परिवेषण 2), welches auch in der ed. Bomb. mit श geschrieben wird.

— प्र 1) *eingehen, eintreten; eindringen, sich verstecken; gerathen in; sich begeben zu*, — *unter*: mit acc. und loc.: गृहम् RV. 10,16,10. R. 2,42,22. KATHAS. 12,101. 18,255. 64,54. PĀNĀT. 96,6. भवनम् M. 11,187. वेषम् MBH. 3,2144. 2279. R. 2,26,5. प्रविशेन्नरेन्द्रभवने कपोतकः VARĀH. BRH. S. 46,68. वेषमनि RĀGA-TAR. 5,393. अश्वकुत्थाम् PĀNĀT. 253,21. गेहम् Spr. 990. मन्दिरम् KATHAS. 18,399. 42,156. मठम् 18,106. 318. पर्णशालाम् RAGH. 12,40. अन्नपुरम् M. 7,224. बिलम् MBH. 1,8394. किद्रम् Spr. 1884. पुरम् नगरम् MBH. 1,8141. 3,2634. 2853. 3060. 5,7339. 13,7697 (med.). HARIV. 7459. R. 1,18,18. 2,51,19 (med.). 86,19 (med.). RAGH. 2,74. KATHAS. 18,118. RĀGA-TAR. 5,451. नगरे MBH. 5,7099. R. 2,59,13. आश्रमपदम् 1,2,25. 2,64,7. सभागम् M. 7,145. 8,1,10. VET. in LA. (III) 2,4. रङ्गम् MBH. 3,2198. वनम् R. 2,35,32. 52,91. 74,27. 107,16. 17 (med.). Çāk. 32. एमशानम् KATHAS. 18,146. अयः RV. 10,51,1. R. 5,13,57 (med.). समुद्रम् MBH. 1,3340 (med.). जलाशयम् HIT. 43,20. सरसि स्नातुं प्रविशति 12,2. रसातलं प्रविशते (विशेदेवी die neuere Ausg.) पङ्के गौरिव दुर्बला HARIV. 12343. कृताशनम्, अग्निम् u. s. w. so v. a. *den Scheiterhaufen besteigen* MBH. 1,6908. 3,2863. 5,7388. R. 2,21,17. 47,8. 66,12. 3,51,29. 41,6. 101,29. VARĀH. BRH. S. 74,16. RĀGA-TAR. 4,368. MĀRK. P. 136,6 (med.). वज्रैः PĀNĀT. 43,23. मध्यमग्रेः MBH. 3,2610. चितायाम् VET. in LA. (III) 14,1. महाचमूम् MBH. 5,5367. चक्रव्यूहम् KATHAS. 48,6. सार्धम् Bhāg. P. 5,13,19. विशो विशः प्रविशिशिवांसम् AV. 4,23,1. प्रविशद्भिः सैन्यादीन् — धाङ्गैः VARĀH. BRH. S. 95,46. विरुगान् — वरुवते प्रविशतः KATHAS. 26,26. अत्र, तत्र MBH. 1,8382. Spr. (II) 2136. KATHAS. 18,76. 172. 325. PĀNĀT. 97,16. नहि सुप्तस्य सिंक्ष्य प्रविशति मुखे मृगाः Spr. (II) 1249. उत्तरापथम् RĀGA-TAR. 5,214. उदीचीमाशाम् Bhāg. P. 1,15,44. पादमूलं मे 3,23,43. विद्वता प्रतिदिनमधो ऽधः प्रविशति Spr. 1802. बाह्वोरत्तरम् MBH. 3,2861. fg. मध्ये तयोः PĀNĀT. 33,6. अन्तरे KATHAS. 18,212. देवस्मितात्तिकम् 13,127. स्वैरं सुप्तस्य सहसैवात्तिकं किं प्रविश्यते (so ist zu lesen) 45,247. अलंकारवतीपार्श्वम् 52,31. मर्कौ शराभ्याः MBH. 3,15681. सायकाः शरीराणि R. GORR. 2,91,15. RAGH. 3,54. भूकायां स्वयङ्गणे भास्करमर्क्यङ्गणे प्रविशतोऽन्तः VARĀH. BRH. S. 5,8. समुद्रमापः, कामा यम् Spr. (II) 971. रसः पृथिवीम् TS. 3,5,2,1. तमः पाप्मानम् 2,1,10,3. 4,12,6. पुरुषो ऽश्वं प्राविशत् AIR. Br. 2,8. असुरा यज्ञं प्राविशन् 6,4. पतिर्जायां प्रविशति गर्भो भूत्वा 7,13. ÇAT. Br. 1,1,4,16. 2,3,4,2. अथैनदांकप्रविशेश KAUSH. Up. 2,14. Bhāg. P. 5,17,15. घण्टामाबध्य कर्णयोः । मम न प्रविशेन्नाम विज्ञोरिति विचित्तयन् *der Name Vishṇu's komme mir nicht zu Ohren* HARIV. 14634. महामतिं प्रविशति सदा लक्ष्म्यः सरित्पतिमिवापगाः Spr. 2882. प्रविश्य सर्वभूतानि यथा चरति मारुतः M. 9,306. आत्मानि प्रविशत्कर्म so v. a. *sich bemächtigend* SARVADARÇANAS. 38,21. प्रविश्य सानुरागस्य चित्तम् KĀM. NITIS. 5,24. प्रविशन्निव चेतांसि 17,15. प्रविशेन्मतेषां पृथक्पृथक् *dringen in* 11,69. बहुवित्कर्मभ्यत्तरम् *sich begeben in* KATHAS. 28,190. चेतः (voc.) प्रविश